नारी सशक्तिकरण पक्ष

" नारी ममता की धारा है, नारी मजबूत कंधों का सहारा है

अंधेरे मे वो राह दिखाए बुझतें दीपक को वो, फिरसे जलाए"

अनन्त गुणों की आगार, पृथ्वी जैसी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, समुद्र जैसी गंभीरता, चन्द्रमा जैसी शालिनता, पर्वतों जैसी मानसिक उच्चता नारी के हृदय मे दृष्टिगोचर होती है। दया, करूणा और स्नेह की मूर्ति तथा शक्ति में चामुण्डा जैसी प्रचण्ड नारी को, देश के निर्माण की आधारशीला माना जाता है। नारी गौरवमयी और स्वावलम्बी जीवन जीना चाहती है। प्राचीन काल में वो ब्रम्हविद्या में पारंगत और युध्दक्षेत्र मे भी कार्यरत पायी है। मध्ययूग में जब " अबला कहकर अधिकार छीन लिये गये और उसकी निष्ठा, लगन, त्याग तथा ममता की उपेक्षा चरम सीमा पर पहूँची तो विद्रोह के स्वर फूटे। उसने अपनी सुप्त शक्ति को झकझोर कर जगा दिया। नारी सशक्तिकरण कोई सत्ता की उथल पूथल या कोई चुनौती नही है। यह तो एक जागृति है। " नारी यदि संकल्प करे तो काया कल्प धरा का कर दे, अपनी शक्ति से वो देखो, भूतल को नन्दनवन कर दे।"

परिवर्तन तो संसार का नियम हैं। देश में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नही रही हैं। इसमें युगानुयूग परिवर्तन होते रहे है। जिस प्रकार माला की एक भी कडी कमजोर होने पर पूरी माला बिखर जाती है उसी प्रकार परिवार का या समाज का एक वर्ग कमजोर हो तो उसका प्रभाव सब पर होता है। समाज में सभी क्षेत्रों में महिलाओं को बराबरी में लाना होगा। महिलाओं को स्वच्छ और उपयुक्त पर्यावरण को, उपयुक्त कराना होगा। ताकि वो हर क्षेत्र में अपना स्वतंत्र फैसला ले सके। चाहे वो स्वयं, देश, परिवार, समाज किसी के लिये भी हो। यही सशक्तिकरण है।

नारी सशक्तिकरण का अर्थ पुरूषों की नकल करना या उन्हे अशक्त करना नही है। यह महज लोगो के दिमाग मे बसी भ्रांतियॉ हैं। नारी सशक्तिकरण के तहत कोई भी नारी किसी भी पुरूष का हक छिनना नही चाहती बस अपना हक लेना चाहती है।

"नारी सशक्तिकरण उचित है, चाहे मार्ग कितना कठिन हो,

बाधाएँ तो आयेंगी, अहम् भी टकरायेगे, पर विजय सशक्ती की निश्चित है।"

समाज की आधी से कम आबादी नारी ही दुर्बल रही तो समाज दुर्बल होगा। फिर समाज की उन्नति कैसे संभव हैं? जैसे गाडी के पहिये बराबर से चलते है तो सुचारू रूप से गाडी चलती है। यदि एक पहिया कमजोर हुआ या उसमें हवा ना हो तो गाडी पंचर हो जायेगी या गाडी ठीक से चल न पायेगी। गृहस्थी की गाडी सुचारू रूप से चलने के लिए नारी का सशक्त होना जरूरी है। भारतीय संविधान में भी पुरूष व स्त्री को भी समान अधिकार दिये है।क्या बचेंद्री पाल की एवरेस्ट विजय से तेनजिंग हिलेरी की उपलब्धियॉ प्रभावित हुयी थी? क्या लता मंगेशकर के विश्वविख्यात होने से मोहम्मद रफी या मुकेश की लोकप्रियता में अंशमात्र भी प्रभाव हुआ है ? क्या मिताली राज के उत्कृष्ट प्रदर्शन से विराट कोहली के प्रदर्शन मे तनिक भी निःसशक्तिकरण की झलक दिखाई पडती है? बिलकुल नही। नारी तो सिर्फ अपना अधिकार पाना चाहती है। एक पत्नि अपने पति को ही सर्वस्व और सर्वोपरि मानती रही है। सहनशीलता की मूरत नारी पे जब परिवार के लोगो का अन्याय, दूराचार व अत्याचार असहनीय होने लगा तब नारी सशक्त बनी और अपने पे हो रहे अत्याचारों पे पूर्ण विराम, लगाने की ठान ली। तो क्या गलत है ? कब तक घुट घुट के

Scanned by CamScanner

जीये ? अपनी आत्मा को कबतक दुखी करेगी। ना दुःख दो ना दुःख लो वाली सोच जागृत हुई। फिर चाहे लोग उसकी सहनशीलता में कमी कहे परन्तु मैं इसे गलत नही मानती। आनन्दित रहना हर आत्मा का अधिकार हैं। नारी की नवजागृति ने उसकी प्रतिभा को निखारा और वह परिवार को समृध्द बनने में सहयोगी बनी। अब वो दासी नही अपने घर की रानी बनी है। उस अबला के आँचल मे दूध है पर आँखों मे पानी नही। सपने साकार करने की दृढ़ता है। ये सशक्तिकरण का ही नतीजा है।

" नारी सशक्तिकरण से हो रहा भारत का नवनिमार्ण, नारी शक्ति से मिट रहा जन मानस मे फैला अंधकार" नारी सशिक्तकरण उसकी वो क्षमता है, जिसमें उसकी योग्यता विकसित की जाती है। जिसमे वह अपने जीवन से जुडे सभी निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशिक्तकरण में हम उसी क्षमता की बात कर रहे है जहॉ महिलाये परिवार व समाज के सभी नियमो को अपनी संस्कृति को, और धर्म को ध्यान मे रखकर अपने निर्णयो की निर्माता खुद बने। नारी हमेशा से ही सुपिरियर है, उसे जो देते है उसे कई गुना बढ़ाकर देने की शक्ति नारी मे है। उसे मकान देते है, तो उसे अपनापन से भरा घर बना देती है। एक हंसी और थोडा सा प्यार देने पर वो अपना दिल न्यौछावर कर देती है। और यदि उससे गलत व्यवहार अन्याय करेगें या स्वाभिमान पर ठेस पहूँचायेगे तो वह पलट कर वार करने को तैयार है। यही सशक्तिकरण है, ऐसे सशिक्तकरण के मैं पूर्णरूप से पक्ष मे हूँ। नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई और आज दहेज प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, भ्रूण हत्या, सती प्रथा आदि भयानक सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में वह सक्षम हुई, कैसे? वह मै बताती हूँ नारी शिक्षित हुई शिक्षा से शक्ति बढ़ी, शिक्षा से उसकी बुद्वि अधिक विकसित हुई । उचित अनुचित का ज्ञान हुआ। उसे सपनों की उड़ान भरने को जैसे पंख मिल गये। निर्धनता दूर करने मे भी वो सक्षम हुई। आजाद पंछी की तरह स्वतंत्र वायु मण्डल मे सांस ले सकी परन्तु धिक्कार है। ऐसे लोगो पर जो लड़की हो तो जबरदस्ती भ्रुण हत्या करवाते है। तब उस माँ की गरिमा को ठेस लगती थी। उसकी आत्मा रो पड़ती थी। पर अब नारी सशक्तिकरण से उसमें विरोध करने की हिम्मत आ गई। अरे ये समझते क्यो नही ? बेटी नही तो माँ भी नही होगी, और माँ नही होगी तो बेटा कहा से मिलेगा?

अंत मे मैं बस विराम देते हुये यही कहना चाहती हूँ "-

"पूर्व युग सा आज का जीवन अब नही लाचार,

सशक्तिकरण से नारी जीवन का खिल उठा संसार,

खिल उठी कली कली नारी के विकास का उपवन सज गया,

नारी के सशक्तिकरण से नया प्रभात आ गया।"

(प्रियंका महेश्वरी)
मध्य उत्तर प्रदेश
कानपुर (पक्ष)

Scanned by CamScanner